Philosophy Revised class

लि B.A.I Hons and B.A.I Sub classes

Visesa Category of Vaisesika (विशेष पदार्थ)

वैशेषिक दर्शन का पाँचवा पदार्थ 'विशेष' को विशिष्ट अर्थ में लिया जाता है। नित्य तथा निरवयव द्रव्यों के विशिष्ट रूप को 'विशेष' कहा जाता है, यह 'सामान्य' पदार्थ विपरीत है। दिक्, काल, आत्मा, मन, पृथ्वी, जल और वायु, अग्नि निरवयव द्रव्यों के परमाणुओं की व्याख्या विशेष के आधार पर ही किया जा सकता है, अतः उपर्युक्त द्रव्यों को एक-दूसरे से अलग करना कठिन जान पड़ता है, इतना ही नहीं, एक प्रकार के विभिन्न द्रव्यों को भी एक-दूसरे से अलग करना कठिन जान पड़ता है। विशेष के आधार पर ही एक आत्मा को दूसरी आत्मा से भिन्न जाना पड़ता है। इस प्रकार नित्य एवं निरवयव द्रव्यों के अपने-अपने व्यक्तिगत स्वरूप को ही 'विशेष' कहे जाते हैं। संक्षेप में ऐसा कहा जा सकता है कि विशेष नित्य पदार्थों की विशेषता की विशेषता है।

'कणाद' ने 'विशेष' को विशिष्ट अर्थों में रखते हुए कहा कि नित्य एवं निरवय (Eternal and Partless) ही सीमित रखा है, इसके केवल उपर्युक्त द्रव्यों की पहचान एवं इनमें पारस्परिक भेद किया जा सकता है। सावयव एवं सावयव पदार्थ (Substances having partless) द्रव्यों के पारस्परिक अन्तर को उनके अवयवों एवं गुणों के आधार पर ही समझा जा सकता है। इनका विश्लेषण करना आसान है। नित्य एवं निरवयव द्रव्यों के विश्लेषण अवयवों से नहीं हो सकता। यही कारण है

P.T.O

कि इनके पारस्परिक भेद को जानने के लिए कणाद ने 'विशेष' का सहारा लिया है।

वैशेषिक के अनुसार 'विशेष' सभी नित्य द्रव्यों में रहता। यह केवल उन्हीं नित्य द्रव्य में रहता है। जैसे- अनेक आत्माओं में पारस्परिक भेद को जानने के लिए 'विशेष' का सहारा लिया जाता है। 'विशेष' आकाश जैसे नित्य द्रव्य में नहीं रहता; क्योंकि आकाश का गुण केवल शब्द होने के कारण अन्य द्रव्यों से भिन्न होता है। इसलिए 'विशेष' आकाश में नहीं पाया जाता।

विशेष नित्य द्रव्य होने के कारण तथा नित्य द्रव्यों की संख्या अनेक है इसलिए विशेष की संख्या भी अनेक है।

'विशेष' को एक स्वतंत्र पदार्थ के रूप में स्वीकार करने हेतु निम्न तर्कों का सहारा लिया जाता है।

(i) विशेष एक वास्तविक पदार्थ है। यह उन्हीं द्रव्यों में पाया जाता है जो वास्तविक (Real) है। विशेष वास्तविक पदार्थ है। अतः विशेष को वास्तविक पदार्थ मानना स्वाभाविक है।

(ii) 'विशेष' अन्य सभी पदार्थों से भिन्न है। यह न तो द्रव्य है, न कर्म है, न सामान्य और न समवाय है। ~~इसे अन्य द्रव्य में~~ इसे किसी अन्य पदार्थ में अन्तर्भूत नहीं किया जा सकता। इस कारण से विशेष को स्वतंत्र पदार्थ मानना युक्तियुक्त है।

हालांकि न्याय वैशेषिक विशेष को स्वतंत्र पदार्थ नहीं मानते। इनके अनुसार आत्मा 'विशेष' अपना स्वतः भेद का रूप है तो परमाणु भी अपना भेद होने के लिए विशेष की कल्पना अनावश्यक प्रतीत होती है, वेदान्त दर्शन भी 'विशेष' को पदार्थ के रूप में स्वीकार नहीं करते।

END